

पाठ-१

पाप

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



99260-40137

पाप क्या ?

- दुःख का कारण बुरा कार्य
 - जो जीव को खोटे मार्ग में डाल दे
- वह पाप है

पाप के भेद



हिंसा



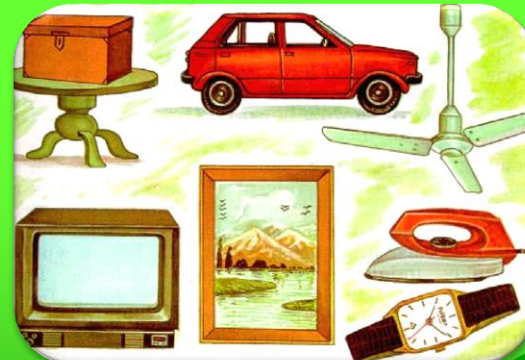
झूठ



चोरी



कुशील



परिग्रह

सबसे बड़ा पाप
कौन-सा है ?

मिथ्यात्व

मिथ्यात्व कैसे ?

जबकि पाँच पापों में तो इसका
नाम आता ही नहीं है ।

लोभ के वश
होकर ही ये जीव
पाप करता है ।

लोभ पाप का बाप है

मिथ्यात्व पाप का दादा

मिथ्यात्व किसे
कहते हैं ?

उल्टी
मान्यता

मिथ्या - झूठा, उल्टा

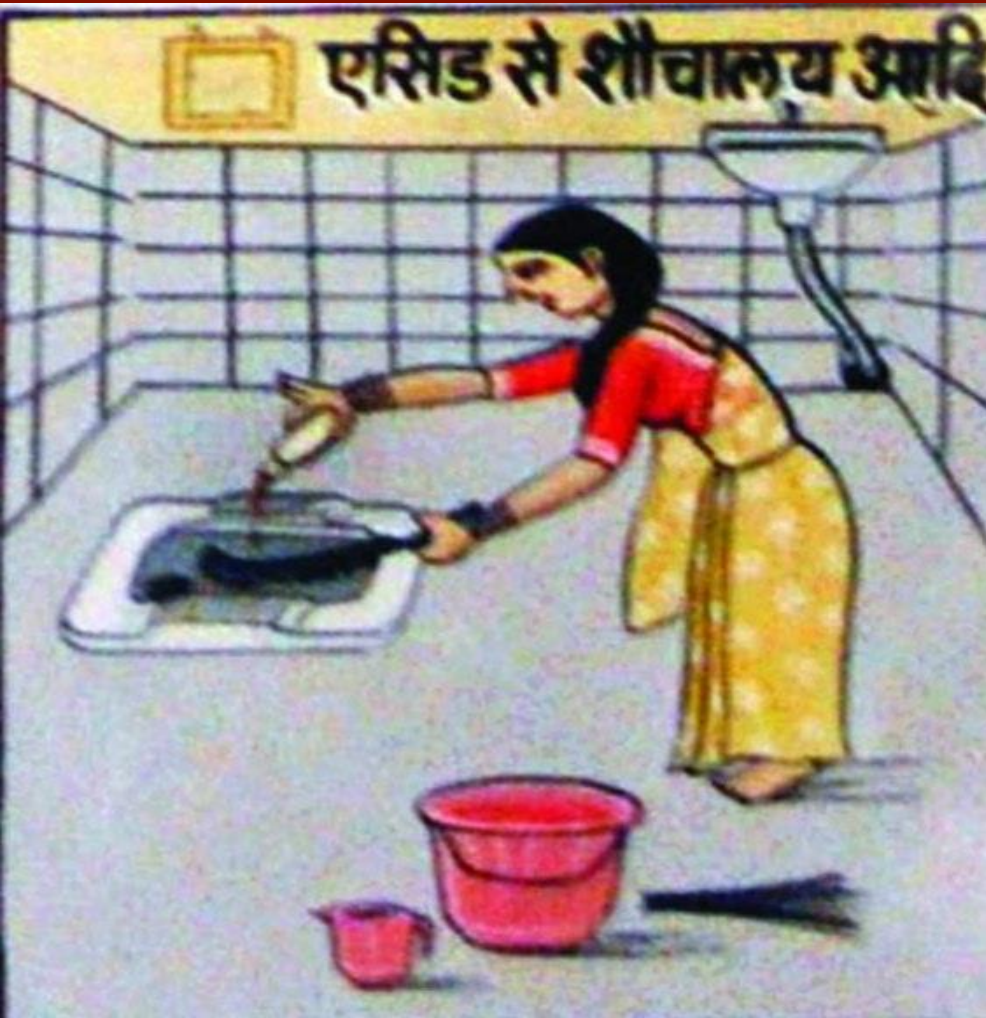
त्व - पना, मान्यता

मिथ्यात्व के वश होकर ही यह
जीव घोर पाप करता है ।

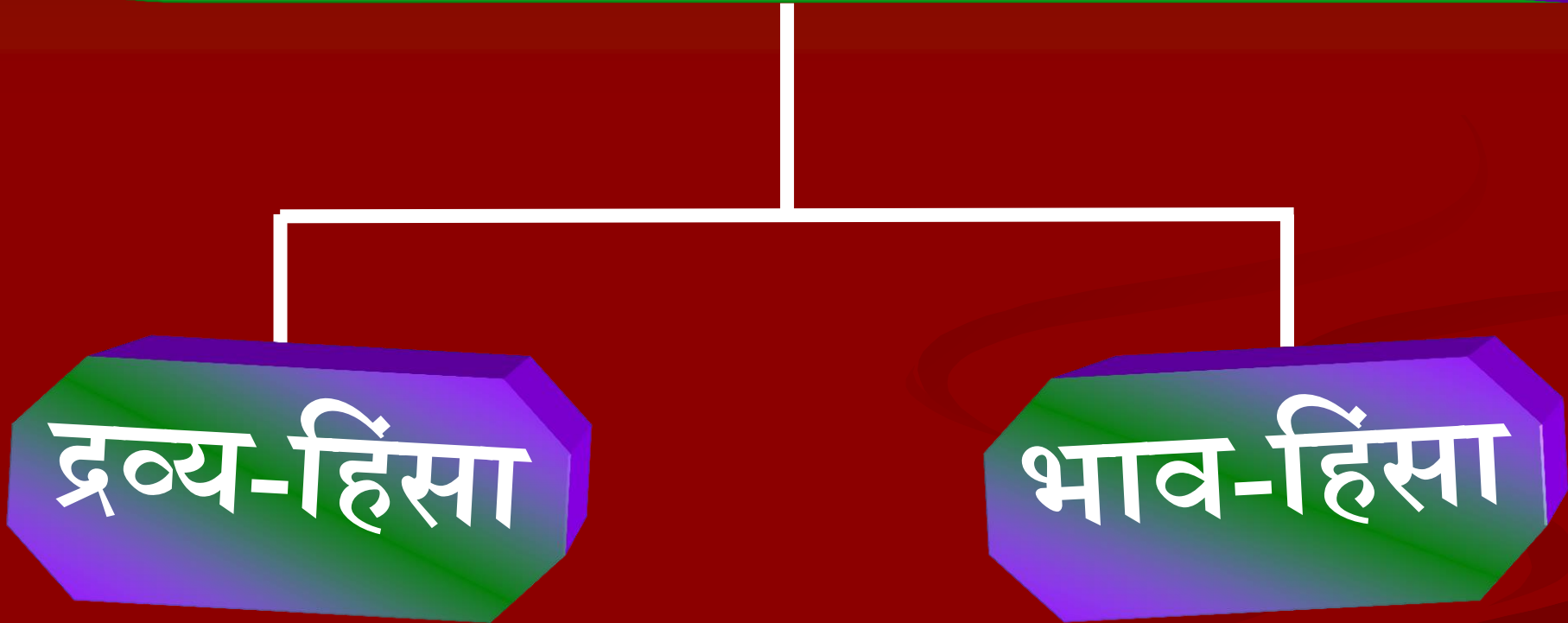
इसलिए मिथ्यात्व
सबसे बड़ा पाप है ।

मिथ्यात्व को
छोड़कर ही जीव
घोर पाप को छोड़
सकता है ।

हिंसा



हिंसा के प्रकार



```
graph TD; A[हिंसा के प्रकार] --> B[द्रव्य-हिंसा]; A --> C[भाव-हिंसा]
```

द्रव्य-हिंसा

भाव-हिंसा

द्रव्य-हिंसा



❖ किसी जीव को
❖ मारना
❖ सताना
❖ या उसका दिल दुखाना
द्रव्य-हिंसा हैं

भाव-हिंसा

❖ आत्मा में
❖ उत्पन्न होने वाले
❖ मोह, राग, द्वेष के परिणाम ही
भाव-हिंसा है

सभी कषाय हिंसा हैं

हिंसा के अन्य प्रकार से भेद

संकल्पी

जान-
बूझकर
मारने का
भाव
शिकारादि

आरम्भी

गृह
संबंधित
कार्यों में
होने वाली

उद्योगी

व्यापारादि
संबंधित
कार्यों में
होने वाली

विरोधी

अपने, अपने
परिवार,
धर्मायतन
पर किए
आक्रमण से
रक्षा के लिए

हिंसा संबंधी कुछ बिन्दु

- ❖ सावधानीपूर्वक चलते हैं तो जीव-घात होने पर भी हिंसा नहीं
- ❖ असावधानीपूर्वक चलते हैं तो जीव-घात न होने पर भी हिंसा है ।

झर



झूठ / असत्य

अप्रशस्त वचन =
= अ + प्रशस्त + वचन
= नहीं + अच्छे + वचन

❖ जैसा देखा, जाना, सुना हो वैसा ही न कह
कर अन्य प्रकार से कहना तो झूठ है ही
❖ साथ ही बिना समझे जैसा देखा-सुना हो
वह कहना भी झूठ है

इसलिए - सत्य बोलने के लिए
सत्य जानना आवश्यक है

असत्य के भेद

- ❖ “है” और कहना – “नहीं है”
- ❖ “नहीं है” और कहना – “है”
- ❖ “जो है” उसे अन्य प्रकार से कहना
- ❖ निन्द्य (नीच) वचन
- ❖ अप्रिय वचन
- ❖ पाप-संयुक्त वचन

गृहस्थ कैसे वचन नहीं बोलता है?

- ❖ स्थूल असत्य, जिसके ६ भेद हैं
- ❖ ऐसा सत्य जिससे स्वयं या दूसरे पर आपत्ति आदि आ जावे

मुनिराज कैसे वचन नहीं बोलते हैं?

- ❖ किसी भी परिस्थिति में असत्य
नहीं बोलते
- ❖ उनके वचन हित-मित-प्रिय होते हैं

चोरी



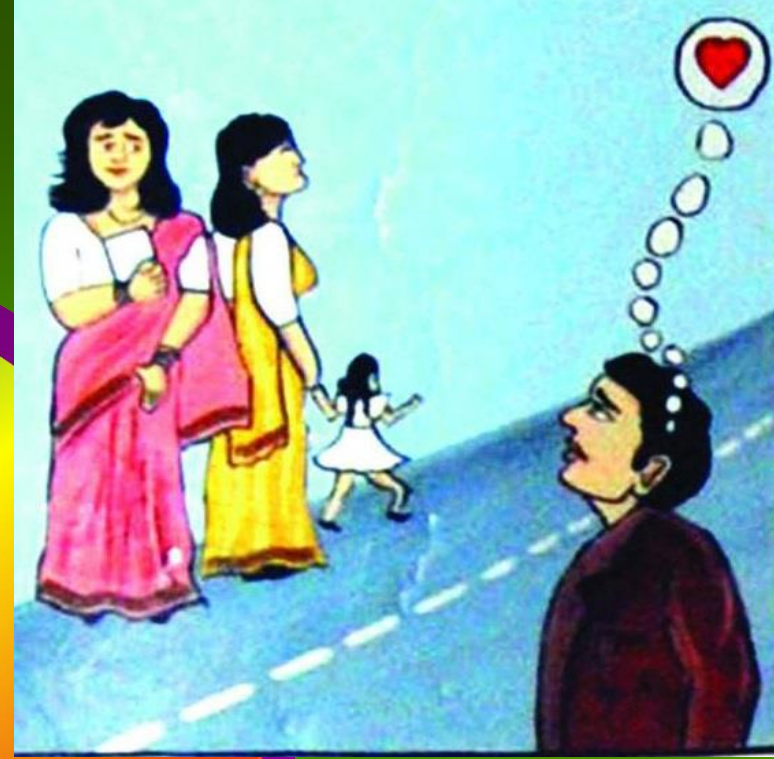
चोरी

- ❖ किसी की गिरी हुई, पड़ी हुई, रखी हुई वस्तु को
- ❖ बिना उसके मालिक की आज्ञा के उठा लेना या
- ❖ उठाकर किसी दूसरे को दे देना चोरी है या
- ❖ उठाने का भाव होना भी चोरी है

कुशील



परायी माँ, बहन
को बुरी निगाह
से देखना
कुशील है



बुरी निगाह
से क्या
मतलब?

- पर स्त्री को
 - ❖ राग-भावपूर्वक देखना,
 - ❖ वचनालाप करना,
 - ❖ मिलना,
 - ❖ स्पर्श करना, आदि

कुशील/ अब्रह्म

बहिरंग

रतिजन्य सुख के लिए
पुरुष-स्त्री की जो भी चेष्टा

अंतरंग

ब्रह्म (आत्मा) में
लीनता का अभाव

अब्रह्मचर्य- शब्दार्थ

❖ अ + ब्रह्म + चर्य =

= नहीं + आत्मा + चरण(लीनता)

❖ आत्मा में लीनता नहीं

परिग्रह



परिग्रह

❖ रुपया-पैसा, मकान आदि जोड़ना

❖ या उनके जोड़ने का भाव रखना

❖ अथवा किसी भी पर वस्तु को अपनी मानना

❖ परिग्रह है

परिग्रह के भेद

बहिरंग

10

अभ्यंतर

14

बहिरंग परिग्रह के भेद

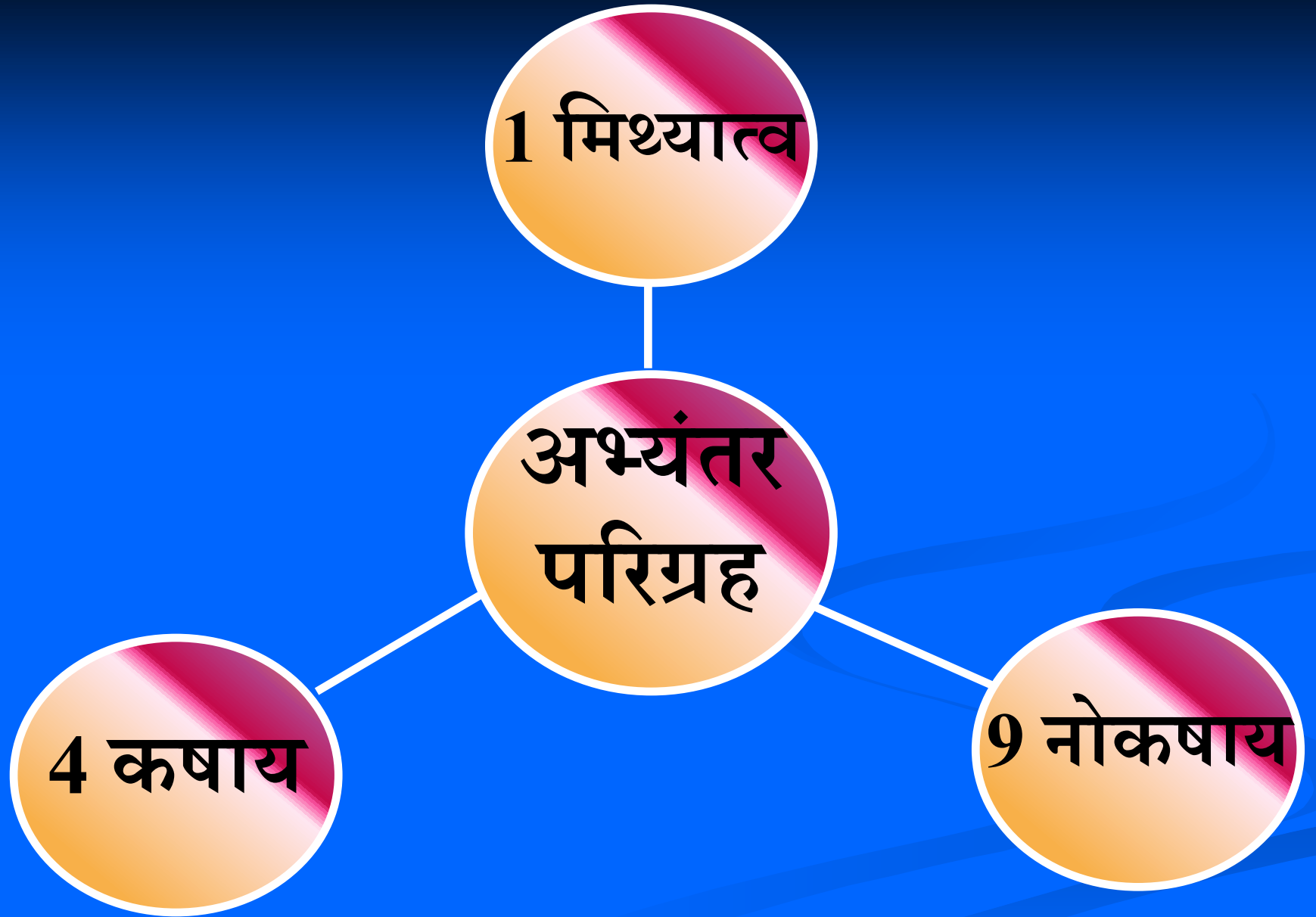
❖ क्षेत्र(जमीन), मकान

❖ सोना, चाँदी

❖ दास, दासी

❖ धन(गौ, पशु धन), धान्य

❖ वस्त्र, बर्तन



अभ्यन्तर परिग्रह के भेद

❖ मिथ्यात्व

❖ क्रोध

❖ मान

❖ माया

❖ लोभ

❖ हास्य, रति

❖ अरति, शोक

❖ भय, जुगुप्सा

❖ स्त्री वेद

❖ पुरुष वेद

❖ नपुंसक वेद

मिथ्यात्व और कषाय परिग्रह कैसे?

❖ जो भी सिद्धों के पास नहीं वो
सब परिग्रह है

❖ ये आत्मा से भिन्न है

परिग्रह : विशेष विचार

- ❖ बहिरंग है, तो अभ्यंतर है ही
- ❖ बहिरंग न हो तो भी अभ्यंतर हो
- जैसे गरीब व्यक्ति

पाप से कैसे बचें ?

मिथ्यात्व और कषायों को छोड़कर